अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

धर्म के दर्पण में मिथक और ईश्वर

गगन, शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश
ई–मेल – *gagnbaliyan065@gmail.com*

सार

यह शोध पत्र मुख्यतः धर्म और ईश्वर की प्राचीनता, उद्भव एवं विकास पर केंद्रित है। धर्म के विकास में मिथक कैसे सहायक होते हैं तथा मिथक किस प्रकार प्रतीकात्मक अर्थ प्रदान कर सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में योगदान देते हैं इस पर शोध पत्र में विचार किया गया है। अलग–अलग संदर्भ में धर्म के अलग–अलग अर्थ होते हैं फिर भी धर्म का अर्थ, धर्म की परिभाषा, धर्म के प्राचीन तत्व इत्यादि समझने में संबंधित शोध पत्र बेहद उपयोगी है। अधिकांश धर्म में उपस्थिति पात्र जिसे ईश्वर की संज्ञा दी जाती है की कल्पना के आधार को तार्किकता की कसौटी पर रखकर समझने का प्रयास किया गया है। धर्म व ईश्वर के विकास के आधारभूत कारणों जैसे डर व सामाजिक व्यवस्था पर तर्क प्रस्तुत किए गए हैं। पाषाण काल की कब्रों से मिले पुरातात्विक साक्ष्य जो पारलोकिकता की ओर संकेत करते हैं को धर्म के आरंभिक स्वरूप के हिस्से के तौर पर देखा गया है। धर्म और ईश्वर के उद्भव और विकास में डर की अहम भूमिका रही जिस पर यह शोध पत्र पाठकों का ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता है। अतः यह शोध पत्र धर्म और ईश्वर की जड़ों की गहनता से छानबीन कर एक तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

बीज शब्द – *डर, ईश्वर, मिथक , अंधविश्वास, धर्म ।*

परिचय

धर्म मानव समाज में अपने आरंभ से लेकर आज तक प्रसांगिक बना हुआ है। संसार में कोई भी वस्तु या विचार हों, उसको उत्थान के उपरांत पतन के दौर से गुजरना होता है परंतु अधिकांश धर्मों में यह पाया गया है कि इनमें निरंतर उत्थान चला आ रहा है। विभिन्न धर्मों में कुछ परिवर्तन तो दृष्टिगत होते हैं परंतु इन धर्मों को पतन का सामना नहीं करना पड़ा। धर्म से संबंधित किसी भी प्रकार के सवाल पर विचार करने से पहले अति आवश्यक है की धर्म को अच्छे से समझ लिया जाए। धर्म का उद्भव मानव समाज की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है और यह सर्वविदित है कि किसी भी घटना के होने के पीछे कुछ निश्चित कारण निहित होते हैं। इन कारणों पर विचार करने से पहले धर्म के शाब्दिक अर्थ को समझ लेना जरूरी बन जाता है।

धर्म आंग्ल भाषा के शब्द Religion का हिंदी अनुवाद है। Religion शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Religio' से बना है जिसका प्रारंभिक अर्थ देवताओं के प्रति कर्तव्य था'।[1] सिसरो कहते हैं 'Religio शब्द

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

'Relegere' से आया है जिसका तात्पर्य है बार–बार पढ़ना या ध्यान पूर्वक विचार करना होता है। Religion के लिए अलग–अलग भाषाओं में अलग–अलग शब्द मिलते हैं जैसे संस्कृत में इसके लिए 'धर्म', प्राकृत व पाली भाषा में 'धम्म' और अरबी भाषा में मजहब शब्द प्रचलित है। पश्चिम की दुनिया में धर्म की अनेकों परिभाषाएं उपलब्ध हैं। धर्म को परिभाषित करने को लेकर जेम्स लेउबा कहते हैं की धर्म की परिभाषा निर्धारित करने के प्रयास हमें बंद कर देने चाहिए क्योंकि कोई भी इस पर सहमत नहीं हो सकता। उनका कहना था कि धर्म के संबंध में भाषाओं की विविधता यह दर्शाती है कि हम धर्म को परिभाषित नहीं कर सकते।[2] फिर भी समय–समय पर विद्वान धर्म को परिभाषित करते रहे हैं। धर्म को समझाते हुए सिगमंड फ्रायड बताते हैं कि धर्म मानवता के सार्वभौमिक जुनूनी न्यूरोसिस के जैसा है। यह बच्चों के जुनूनी न्यूरोसिस की तरह पिता के साथ संबंध में ऑडीपस कॉम्प्लेक्स से उत्पन्न होता है। चूंकि धर्म बच्चों के न्यूरोसिस की तरह है इसलिए अनुयायी बच्चों की तरह व्यवहार करता है व धर्म बचपन की तरह विकास के निचले चरण का प्रतिनिधित्व करता है। फ्रायड धर्म को मानसिक बीमारी कहते हैं। उनका कहना है कि धर्म की उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक है न की सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक'।[3] कार्ल मार्क्स धर्म को लोगों के लिए अफीम के तौर पर देखता है[4]', अर्थात मान लीजिए किसी व्यक्ति को कोई शारीरिक चोट लग जाती है और वह दर्द से कराह रहा होता है तब उसे अफीम खिलाकर नशे की अवस्था में लाया जाता है ताकि उसे दर्द का एहसास ना हो। इसी प्रकार धर्म निम्न तबके के व्यक्तियों को उनकी कमजोर आर्थिक स्थिति का आभास नहीं होने देता। गार्टज के अनुसार" धर्म उन प्रथाओं का परिसर है जो अलौकिक शक्तियों के अस्तित्व के आधार पर आधारित है, चाहे वे व्यक्तिगत हों या अव्यक्ति, जो आमतौर पर अदृश्य हैं"।[5] "फ्रायड के अनुसार, "धर्म सार्वभौमिक विकृति है इसलिए ही यह सभी स्थानों व समय में दिखाई देता है"।[6]

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी धर्म को अलग–अलग अर्थों में परिभाषित किया गया है, जैसे कर्तव्य के रूप में, आचरण के रूप में, स्वभाव के रूप में एवं पंथ तथा साधना पद्धति के रूप में। इस शोध में धर्म शब्द का जिस अर्थ में उपयोग किया जाएगा वह है पंथ एवं साधना पद्धति। धर्म शब्द संस्कृत भाषा के 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है– धारण करना।[7] सामान्य शब्दों में कहा जाए तो धर्म विश्वासों, प्रथाओं और दृष्टिकोणणों का एक समूह है जो अलौकिकता, पवित्रता या दैवीय से संबंधित है, यह किसी देवता की पूजा या धार्मिक आस्था के प्रति समर्पण को दर्शाता है। अगर तर्क और कुतर्क के आधार पर कहा जाए तो धर्म कुतकों का एक ऐसा समाज है जिसमें तार्किकता अछूत है। सामान्यतः धर्म के पास अपना पवित्र ग्रंथ होता है जो संबंधित धर्म के विश्वासों और नैतिक नियमों के संबंध में जानकारी देता है, यह ग्रंथ एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। धर्म के अपने उपासना स्थल होते हैं। अधिकांशतः धमर्मों में पुरोहित वर्ग उपस्थित होता है जो उस धर्म से जुड़े लौकिक, अलौकिक व नैतिक नियमों के संबंध में उस धर्म के मानने वालों को शिक्षित करता है व धार्मिक विषयों पर उनको नेतृत्व प्रदान करता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

धर्म की उत्पत्ति एवं विकास

धर्म की उत्पत्ति अथवा जन्म के संबंध में कोई भी निश्चित समय बिंदु बता पाना लगभग नामुमकिन काम है लेकिन प्राप्त तथ्यों के आधार पर उस समय रेखा के आसपास जाया जा सकता है। आइए पृथ्वी के सबसे रोचक, प्रासंगिक व संवेदनशील विषय अर्थात धर्म के इतिहास का एक गहन और सूक्ष्म विश्लेषण कर लिया जाए। आज से 25 लाख साल पहले अफ्रीका के पत्थरों से औजार बनाते हुए हमारे पूर्वज ने शायद ही अनुमान लगाया होगा कि भविष्य में उसकी आने वाली पीढ़ियां समूह बनाकर रहना शुरू करेंगी और धीरे–धीरे यह सामूहिक संरचना समाज के रूप में विकसित हो जाएगी। केन्या की तुर्काना झील से पानी पीते वक्त हमारे पुरखे ने यह सोचा भी नहीं होगा कि उसके पोते–पोतियां निकट भविष्य में काल्पनिक और मिथकीय कहानी गढ़ेंगे। किसी मैमथ (हाथी का पूर्वज) का शिकार करते हुए, किसी सांप को मारते वक्त, आग में मांस भूनते हुए या किसी वृक्ष पर बैठे हुए हमारे चिंतनशील दादा–दादी या नाना–नानी ने शायद ही यह सोचा हो कि उनके पोते–पोतियां हाथी, सांप, आग और वृक्ष को कल्पित और मिथकीय विश्वासों के रूप में पूजना आरंभकर देंगे और यहीं मिथकीय विश्वास धीरे–धीरे विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए एक ऐसी सामूहिक कल्पित विचारों वाली संस्था का रूप ले लेगी जिसे हम सभी आज धर्म, मजहब और रिलीजन जैसी सार्थक भाषिक ध्वनियों के रूप में सुनते वह बोलते हैं। चूंकि हमारे अध्ययन का केंद्र बिंदु धर्म है इसलिए विषयांतर से बचते हुए हम मानवीय अतीत के समुद्र में डुबकी लगाकर उन कल्पित व मिथकीय विश्वासों की प्राचीनता, उनके उद्भव के कारणों और उनके विकास की प्रक्रिया को समझने की कोशिश करेंगे जिसे आज के दौर में धर्म के नाम से जाना जाता है।

किसी भी घटना के घटित होने की कुछ वजह होती हैं, इसी सिद्धांत को कारण–कार्य नियम भी कहा जाता है। अपने अब तक के जीवन में आप संभवतः एक कहावत से रूबरू अवश्य हुए होंगे जो कुछ इस प्रकार सुनाई देती है, "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है"। यह हो सकता है कि धर्म के उद्भव होने के कुछ व्यक्तिगत कारण या सामूहिक आवश्यकता रही हो। इससे पहले इस बात पर विचार कर लेना उचित रहेगा कि आखिरकार हमारे पूर्वज व्यक्तिगत जीवन शैली से सामूहिक जीवन शैली की और कैसे प्रविष्ट हुए ? इस संदर्भ में युवाल नोआ हरारी अपनी किताब सेपियंस में लिखते हैं, "एक बछड़ा जन्म लेने के कुछ ही समय बाद दौड़ने लग जाता है, बिल्ली का बच्चा जन्म लेने के कुछ ही हफ्तों बाद अपनी मां को छोड़कर खुद अपने भोजन की तलाश में निकल पड़ता है। इंसानी बच्चे असहाय होते हैं वह भरण–पोषण, संरक्षण और शिक्षा के लिए कई वर्षों तक अपने बड़ों पर निर्भर रहते हैं। इस चीज ने मानव जाति की असाधारण सामाजिक क्षमताओं और उसकी अनूठी सामाजिक समस्याओं में बड़ा योगदान किया है पीछे लगे मुहताज बच्चों के साथ अकेली माताएं अपनी संतानों और खुद के लिए शायद ही पर्याप्त भोजन जुटा पाती थी बच्चों को बड़ा करने में सामूहिक सहयोग की आवश्यकता होती थी"।[8] संभवतः यह सामूहिक सहयोग परिवार के रूप में विकसित हो गया होगा। इन्हीं 'आवश्यकताओं' ने हमारे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

पुरखों को समूह में रहने के लिए प्रेरित किया होगा। यह तो बात हुई उन कारणों में से एक कारण की जिसने होमो प्रजाति को समूह में रहने के लिए बाध्य किया लेकिन उन कल्पित मिथकीय विश्वासों और कहानियों के सृजन के क्या संभव कारण हो सकते हैं ? अपनी किताब सेपियंस में युवाल कुछ भाषिक ध्वनियों का जिक्र करते हैं जो वानरों (एप्स). बंदरों वह हरे बंदरों द्वारा संवाद के लिए उपयोग में लाई जाती है। सेपियंस के हवाले से "प्राणी वैज्ञानिकों ने ऐसी ही एक पुकार की पहचान की है जिसका मतलब होता है 'सावधान गिद्ध। एक थोड़ी सी अन्य प्रकार की ध्वनि का मतलब होता है 'सावधान शेर'। जब शोधकर्ताओं ने पहले प्रकार की ध्वनि की रिकॉर्डिंग बजाई तो सब बंदर डरे हुए ऊपर देखने लगे। जब इस झुंड में दूसरी प्रकार की ध्वनि की रिकॉर्डिंग बजाई गई तो सभी बंदर डर कर पेड़ पर चढ़ गए'।[9] कई बार यही बंदर इन ध्वनियों को निकाल कर अपने साथी बंदरों को डरा कर उनसे उनका खाना छीनने के लिए उपयोग में लाते हैं। कुछ ऐसा ही अपने जीवन में हमने भी अपने छोटे या बड़े बहन–भाइयों को मम्मी–पापा का नाम झूठ में ही लेकर उनसे यह कहते हुए कि "मम्मी तुम्हें डांटने आ रही हैं रिमोट मुझे दे दो" उन्हें डरा कर उनसे टीवी का रिमोट कई बार हथियाया है। कुछ इस प्रकार का ही डर दिखाकर धार्मिक पुरोहित या ज्योतिषी न जाने कितनी बार आपसे दान दक्षिणा ले गए होंगे। कभी शनि की साढे साती की दुहाई देकर तो कभी मंगल की दशा भारी बताकर और कभी–कभी आपने खुद ही इस लालच में दक्षिणा दे दी होगी की अज्ञात और कल्पित देवतागण आपका भला करेंगे। हमारे पूर्वज कल्पित कहानियों और मिथकीय पात्रों को मूर्त रूप देने में बेहद माहिर थे । इसका उदाहरण है कल्पित विश्वासों की हामी भरती जर्मनी के सिटेडल गुफा में पाई गई नर–सिंह (या नारी–सिंह) की हाथी दांत से निर्मित मूर्ति जो लगभग 32000 साल पुरानी है ।[10]

संभवतः यह कल्पित धार्मिक पात्रों को मूर्त रूप देने की शुरुआत हो सकती है। युवाल इन कल्पित कहानियां व पात्रों को गढ़ने की वजह आज से 70000 साल पहले हुई संज्ञानात्मक क्रांति को मानते हैं क्योंकि संज्ञानात्मक क्रांति के बाद होमो सेपियंस ने अपने मस्तिष्क में कल्पना करने की शक्ति का विकास कर लिया था। इन सभी तथ्यों को आधार बनाकर यह कहा जा सकता है की संभवतः इन मिथकीय पात्रों के सृजन में 'डर' का महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा।

तो क्या केवल 'डर' ही वह कारक है जिसकी वजह से होमो प्रजाति ने ईश्वर व मिथकीय कल्पनाएं रची जो आगे चलकर धर्म का आधार बनी ? यह लगभग मान लिया गया है की इन सब मिथकीय विश्वासों के पीछे एक कारण 'डर' रहा होगा लेकिन संभवतः केवल 'डर' ही कारण था यह कहना तर्कसंगत नहीं लगता। जब मानव समूह बनाकर रहने लगे धीरे–धीरे समूह बड़े होने लगे तब उन समूह को किसी मिथक के साथ बांधकर उनमें एकता का भाव लाकर उस समूह को व्यवस्थित रूप से चलाना आसान रहा होगा। युवाल सेपियंस में बताते हैं किन्ही दो समान धर्म मानने वाले अजनबियों को संबंधित धर्म के लिए एक साथ सहयोग करने के लिए आसानी से तैयार किया जा सकता है। यही काम हम राष्ट्रीयता व जातीयता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

को आधार बनाकर भी कर सकते हैं लेकिन आरंभ में राष्ट्रीयता व जातीयता के सिद्धांत सृजित नहीं किए गए थे इसलिए यह संभावना नजर आती है कि तब किसी समूह में एकता का भाव लाने के लिए ऐसी मिथकीय कल्पनाओं का सहारा लिया गया हो।

धर्म के अस्तित्व के जिन कारणों पर हमने अभी ऊपर चर्चा की उनमें एक कारण है 'डर' व दूसरा कारण है 'सामुहिक व्यवस्था'। लेकिन अगर ध्यान से देखा जाए तो सामुहिक व्यवस्था बनाने के लिए भी डर का ही उपयोग किया गया। हम अगर आज के समाज में प्रचलित कुछ मिथकीय विश्वासों पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि कैसे डर को मिथक का चोगा पहनाकर किसी कार्य को निषेध किया गया होगा जो तत्कालीन समाज के लिए अनुचित रहा होगा। ऐसे ही एक मिथक का हम पहले जिक्र कर चुके हैं जिसको पानी को प्रदूषित होने से बचाने के लिए प्रयोग किया गया। अर्थात यह कहा जा सकता है कि मिथक, ईश्वर और देवताओं के सृजन व धर्म के विकास में डर ने एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व के रूप में कार्य किया है।

धर्म की प्राचीनता कि अगर बात की जाए तो इसको लेकर निश्चित व प्रमाणित तौर पर किसी समय बिंदु को निर्धारित करना अभी तक मुमकिन नहीं हुआ है क्योंकि उस समय के मानव के विचारों, उनके समाज व मान्यताओं पर शोध करने के लिए हमारे पास केवल उनके द्वारा पत्थरों से बनाए गए औजार, विभिन्न पशुओं के दांतों से बनाए गए मनके, पत्थर कला व कुछ अन्य उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं ही उपलब्ध हैं। तत्कालीन मानव समुदाय में लिपि का पूर्णतः अभाव था। फिर भी हमें कुछ ऐसी कब्रें प्राप्त हुई हैं जिनको आधार बनाकर हम वर्तमान धर्म के आरंभिक व प्राग रूप को समझने की कोशिश कर सकते हैं। ''ऐसी ही एक कब्र 1955 ई० में सुंगीर (रूस) से प्राप्त हुई जो लगभग 30000 साल पुरानी है, इसमें एक 50 साल के आदमी को दफनाया गया है जिसे मैमथ के दांतों से बने मनको से ढका गया है, मृतक के सिर पर लोमड़ी के दांतों से सज्जित एक टोप व कलाई पर हाथी दांत के 25 कंगन हैं। मृतक को कंगन व मनके पहनाकर सज्जित तौर पर दफनाया गया है'।[11] कुछ ऐसी ही मान्यताएं आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं जिनके अनुसार मृतक का अंतिम संस्कार करने से पहले उसे नहलाकर साफ वस्त्र पहना दिए जाते हैं और उसके उपरांत उसका अंतिम संस्कार किया जाता है क्योंकि यह मान्यता है कि मृतक अब इहलोक से परलोक (स्वर्ग) में जा रहा है इसलिए उसे इस प्रक्रिया के द्वारा पवित्र किया जाता है और इस प्रक्रिया में पवित्र करने के लिए गंगाजल का उपयोग किया जाता है (सनातन धर्म के संदर्भ में)। एक अन्य मकबरे में दो कंकाल आमने–सामने दफन गए हैं ''इनमें से एक 12 साल के लड़के का दूसरा 9 साल की लड़की का कंकाल है। इनको भी हाथी दांत के मनको से ढाका गया है तथा इनके चारों ओर कुछ मूर्तियां रखी गई हैं व हाथी दांत से बनी कुछ अन्य वस्तुएं भी रखी गई हैं'।[12] संभवतः यह मूर्तियां खिलौने के रूप में प्रयोग होती रही होगी और यह वस्तुएं दफनाए गए बच्चों के मनोरंजन के साधन के लिए परलोक में काम आएंगी इस लिए इन वस्तुओं को इनके साथ दफनाया गया होगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

यूरोपीय राष्ट्र ऑस्ट्रिया से 25000 साल पहली महिला की 5 इंच की चूना पत्थर की मूर्ति प्राप्त हुई है जिसके प्रजनन देवी की तरह बढ़े हुए स्तन, चौड़े कूल्हे और बड़ा पेट है।[13] कुछ कुछ ऐसी ही मूर्ति हड़प्पा सभ्यता से भी प्राप्त हुई थी। 'हिरोइन टैचिट (दक्षिण रेवंत दृ इजरायल) से बुजुर्ग महिला की 12000 साल पुरानी छोटी सी कब्र मिली है जिसमें से 50 कछुए के खोल, स्थानीय व दूर के जानवरों के शरीर के अंग, जिनमें एक जंगली सूअर, एक चील व एक तेंदुआ शामिल है। कुछ पुराविदों का सुझाव है कि यह एक शमन (दफनाने के दौरान अनुष्ठानिक प्रक्रिया) के शुरुआती दफन में से एक हो सकती है'।[14] विभिन्न समयों में कब्रों से मानव के साथ पशुओं, उपयोग की आवश्यक वस्तुओं, मिट्टी के खिलौनों को दफनाने के साक्ष्य तत्कालीन मानव प्रजाति के परलोक में विश्वास को प्रमाणित करते हैं।

ऐसे ही अनेकों प्रमाण भारतीय उपमहाद्वीप की धरती पर भी मौजूद हैं जिनके आधार पर उसे समय के मिथकीय विश्वासों के संबंध में तार्किक अनुमान लगाया जा सकता है। आइए सराय नाहर राय से बात शुरू की जाए। दरअसल सराय नाहर राय उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले से 15 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में अवस्थित है। ''यहां से मध्यपाषाण कालीन पुरातात्विक साक्ष्य के तौर पर एक कब्र मिली जिसमें चार इंसानों के शव हैं जो दो जोड़ों में रखे हुए हैं। इसमें एक पुरुष और एक स्त्री का शव है। आरके वर्मा उनके पति–पत्नी होने की संभावना व्यक्त करते हैं तथा परिवार की अवधारणा के विकसित होने की बात कहते हैं। दफनाने का तरीका व शवों में रखा गया सामान मृत्यु के समय किसी अनुष्ठान या मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास को प्रदर्शित करता है''।[15] भीमबेटका की गुफा के एक चित्र में बैल और सूअर की संयुक्त विशेषताओं वाले जानवर को एक मानव रूप में केकडें का पीछा करते दिखाया गया है। इस दृश्य को दो अन्य शेल्टर में भी दोहराया गया है इसलिए माना जाता है कि यह आदिवासी पौराणिक कथाओं को संदर्भित करता है।[16] कई कब्रों से इंसानी हड्डियों के साथ जानवरों की हड्डियां भी उपलब्ध हुई है। इनमें सबसे प्रमुख है कश्मीर का बुर्जहोम। बुर्जहोम नवपाषाण कालीन क्षेत्र है। बुर्जहोम से प्राप्त कब्र से इंसान और कुत्ते की हड्डियां मिली हैं, यह उस व्यक्ति का पालतू जानवर हो सकता है क्योंकि मानव पशुपालन मध्य पाषाण काल से आरंभ कर चुका था। ऐसे दफनों में सुअर और कूबड़ वाला मवेशी भेड़, बकरी आदि शामिल हैं।[17] उपभोग की वस्तुओं खिलौने पालतू पशु इत्यादि को साथ में दफनाने के प्रमाण यह संकेत देते हैं कि तत्कालीन मनुष्य ने मृत्यु के बाद की जिंदगी से संबंधित विश्वास विकसित कर लिए थे। संभवतः उस समय का मानव परलोक के संबंध में यह विचार रखता हो कि जैसे इस लोक में या इस जीवन में पालतू पशु खाना हथियार वह मनोरंजन के साधन आवश्यक हैं मृत्यु के बाद के जीवन यापन के लिए भी उनकी आवश्यकता रहेगी। एक ऐसी परलोक की कल्पना जहां सब सुविधा, सब वस्तु उपलब्ध हो यानी स्वर्ग, का विचार इस समय के बाद ही कहीं जाकर विकसित हुआ होगा। इस समय के परलोक में आवश्यक चीजों को इसी लोक से ले जाए जाने का विश्वास उस समय के मानव समाज में बना रहा होगा। क्योंकि हम पहले ही बता चुके हैं कि अभी तक प्राप्त प्रमाणों के अनुसार उस

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

समय के मानव समाज में लिपि का पूर्ण अभाव था अर्थात इस समय का मानव निरक्षर था इसलिए तत्कालीन समाज व धर्म की मान्यताओं का सिर्फ अनुमान लगाया जा सकता है और इन अनुमानों का आधार प्राप्त अनुष्ठानिक प्रक्रियाओं के वें पुरातात्विक साक्ष्य हैं जो उस समय के मानव समाज ने अंत्येष्टि के समय किया तथा वें चित्र हैं जो भीमबेटका की गुफा में प्रारंभिक चित्रकारों ने उकेरे थे।

मिथक की अवधारणा

मिथक पूर्णतः कल्पनाओं पर आधारित होते हैं। यह ऐसे विश्वास हैं जिनकी वास्तविकता लगभग संदिग्ध है। इन्हीं काल्पनिक विश्वासों को मिथक की संज्ञा प्रदान की जाती है। मिथक किसी भी घटना या मानवीय गुण को प्रतीकात्मक अर्थ प्रदान करते हैं। आइए इसको एक उदाहरण के साथ स्पष्टता से समझते हैं– पानी को लेकर एक मिथक प्राचीन काल से समाज में बना हुआ है कि पानी (उपयोग योग्य) में मल त्याग या मूत्र विसर्जन नहीं करना चाहिए, जो ऐसा करता है उसकी अकाल मृत्यु हो जाती है। यह एक मिथक है कि पानी में मल त्याग से मृत्यु होती है। दरअसल इसका प्रतीकात्मक अर्थ हैय यह सर्व विदित है कि पानी के खुले स्रोत पुरातन, समाज की पानी की आपूर्ति के एकमात्र स्रोत रहे थे। संभवतः इन स्रोतों को गंदा या प्रदूषित होने से बचने के लिए तत्कालीन समाज ने यह मिथक गढ़ा होगा। मिथक एक विश्वास या सिद्धांत है ।[18] सिद्धांतों को मिथकों की उतनी ही आवश्यकता है जितनी मिथकों को सिद्धांतों की है। यदि सिद्धांत मिथक को प्रकाशित करते हैं तो मिथक सिद्धांत की पुष्टि करते हैं।[19] मिथक अनुष्ठानवादी सिद्धांत के अनुसार, "मिथक अपने आप खड़ा नहीं होता बल्कि अनुष्ठान से बंधा होता है। मिथक केवल एक कथन नहीं है बल्कि एक क्रिया भी है" ।[20]

किसी भी धर्म के अस्तित्व में आने से बहुत पहले कुछ काल्पनिक विश्वास जन्म लेते हैं जिनकी सत्य होने की संभावना लगभग शून्य होती है । तब यह प्रश्न उठता है की फिर क्यों मानव मस्तिष्क ऐसी बातों और प्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास करने लगता है? कुछ विद्वान मानते हैं कि ये विश्वास धीरे–धीरे ऐसी व्यवस्था विकसित करते हैं जो संबंधित समाज को व्यवस्थित रूप से चलने में मदद करते हैं और शायद इसीलिए मनुष्य इन विश्वासों को विकसित करते हैं। यह हो सकता है की विश्वास समाज को संगठित और व्यवस्थित रूप प्रदान करते हों परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए की यह विश्वास उस समय में जन्मे थे जब सभ्य मानव समाज का अस्तित्व ही नहीं था। उस समय मानव अपने आसपास के वातावरण से सामंजस्य बनाने की जद्दोजहद में लगा हुआ था तथा पर्यावरण में हो रही प्राकृतिक घटनाओं जैसे बिजली का कड़कना, अंधेरा होना, सूर्य का प्रकाश इत्यादि को चकित होकर देखता व समझने का प्रयास करता था। पृथ्वी पर विद्यमान प्रत्येक जीव में एक मनोभाव मूल रूप से पाया जाता है वह है 'डर' अथवा 'भय, जीवन को को खो देने का भय। चूंकि मानव अंधेरे में देख नहीं सकते इसलिए अंधेरे में मानव असुरक्षित महसूस करते हैं। वह अपनी गतिविधियों को दिन के उजाले में पूर्ण करते रहे हैं और रात्रि में विश्राम। सूर्योदय के परिणाम स्वरूप जब अंधेरा छठ जाता है तब वह अपनी दैनिक गतिविधियों में संलग्न हो जाते

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

हैं। ऐसे में मानव मन में सूर्य के प्रति कृतज्ञता का भाव आना स्वाभाविक ही है और यह संभावना उस समाज में तब और प्रबल हो जाती है जब उस समाज में किसी भी भौगोलिक घटना की वैज्ञानिक व्याख्या उपलब्ध न हो। ऐसी स्थिति में सूर्य और अंधेरे को लेकर मिथक का उपज जाना सामान्य बात है। दिन में कार्य करना और रात्रि में आराम करने की यह व्यवस्था आज तक मानव समाज में बनी हुई है । माताएं अपने बच्चों को अक्सर कहानियां सुनाती हैं की रात्रि में राक्षस या पिशाच घूमते रहते हैं जो इंसानों को मार कर खा जाते हैं। इन राक्षसों के लिए 'निशाचर शब्द का उपयोग भी किया जाता है जिसका मतलब ही होता है रात्रि (निशा) में विचरण करने वाला। यह प्रचलित विश्वास मानव के अंधेरे से डर और जीवन के खो देने के डर की पुष्टि करता है। इन विश्वासों की उत्पत्ति में 'डर' ने उद्दीपन का कार्य किया है। यही विश्वास जिन्हें अंधविश्वास भी कहा जा सकता है, मिथकों के रूप में विकसित होते हैं और इसी प्रक्रिया में, ऐसे ही विश्वासों और मिथकों का समूह विकसित होकर एक संगठित संस्था को जन्म देता है जिसे धर्म की संज्ञा दी जाती है।

मिथक का उस स्थान की भौगोलिक दशाओं से गहरा रिश्ता होता है जहां पर वह प्रचलित होता है। गौहर रजा याद दिलाते हैं, " इतिहास यह बताता है कि इंसान के विचारों और उसके आसपास फैली भौतिक वास्तविकता में चोली दामन का रिश्ता है"।[21] दूध के संबंध में कोई भी मिथक या विश्वास वही पनप सकता है जहां दूध उपलब्ध होता है। विश्वास और मान्यताएं भी भौगोलिक दशाओं के द्वारा उपजी होती हैं जैसे कि रमजान में पानी पीने से परहेज करने का रिवाज इसलिए चला क्योंकि इस्लाम जिस जगह पर जन्मा वह एक रेगिस्तानी इलाका है यानी वहां पानी की किल्लत है और इसीलिए रोजे में पानी पीने से मनाही की जाती है ताकि उसका कम से कम सेवन किया जा सके और उसे भविष्य के लिए बचाया जा सके। किसी भी प्रकार की खाद्य अथवा पेय सामग्री के संरक्षण के लिए ही धर्म में उपवास अथवा रोजे की व्यवस्था अक्सर देखने को मिलती है। कुछ ऐसा ही अपने प्रधानमंत्रीत्व काल में लाल बहादुर शास्त्री ने किया था। जब भारत में अनाज की कमी हो गई तो तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने सप्ताह में एक दिन उपवास करने का आह्वान किया। समाज में बहुत से विश्वास ऐसे भी हैं जिनका कोई वाजिब तर्क ही उपलब्ध नहीं है फिर भी वे प्रचलन में है। इस संबंध में स्टुअर्ट वाइजे अपनी किताब सुपरस्टिशन में लिखते हैं, "जब तर्कहीनता से लाभ मिलता है तब तर्क खत्म हो जाते हैं"।[22]

जिस दुनिया में हम रह रहे हैं इसके सृजन को लेकर भी भिन्न–भिन्न विश्वास प्रचलित हैं जैसे दृ " तीन अब्राहमिक धर्म (यहूदी, ईसाई व इस्लाम) ब्रह्मांड व मानव उत्पत्ति के दो मूल मिथक मानते हैं। पहला जिसमें 6 दिन में याहवे, गॉड या अल्लाह स्वर्ग–नरक, धरती, प्रकाश, आसमान, समुद्र, शुष्क भूमि, पेड़–पौधे, हरियाली, दिन और रात, तरह–तरह के जंगली जानवर और अपनी छवि से इंसान पैदा किया। ईश्वर अपनी रचना से बहुत खुश था और सातवें दिन उसने आराम किया। दूसरी कहानी के अनुसार, ईश्वर ने मिट्टी से मर्द और औरत का पुतला बनाया और उसमें आत्मा प्रवेश कराई, उसे स्वर्ग में रखा और एक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

खास फल खाने से मना किया जो उसने खा लिया तब उसे सजा के तौर पर जमीन पर भेजा''।[23] भागवत पुराण में ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संबंध में वर्णित है –भगवान से भिन्न दूसरी कोई भी वस्तु नहीं है।... वे दृष्टा होने पर भी ईश्वर हैं, स्वामी हैं निर्विकार होनेपर भी सर्वस्वरूप हैं।... भगवान् माया के गुणों से रहित एवं अनंत हैं।.... मायापति भगवान ने एक से बहुत होने की इच्छा होने पर अपनी माया से अपने स्वरूप में स्वयं प्राप्त काल, कर्म और स्वभाव को स्वीकार कर लिया। भगवान् की शक्ति से ही काल ने तीनों गुणों में क्षोभउत्पन्न कर दिया।... रजोगुण और सत्त्व गुण की वृद्धि होने पर महत्तत्त्व का जो विकार हुआ, उससे ज्ञान, क्रिया और द्रव्य–रूप तमः प्रधान विकार हुआ। इसके तीन भेद हैं... वैकारिक, तैजस और तामस।... जब पंच महाभूतों के कारण रूप तामस अहंकार में विकार हुआ, तब उससे आकाश की उत्पत्ति हुई।... इसके तीन भेद हैं... वैकारिक, तेज और तामस। तेज के विकार से जल की उत्पत्ति हुई।... जल के विकार से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई।..... वैकारिक व्यवहार से मन की और इंद्रियों के दस अधिष्ठाता देवताओं की भी उत्पत्ति हुई। उनके नाम हैं– दिशा, वायु, सूर्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि, इंद्र, विष्णु, मित्न और प्रजापति। तेजस व्यवहार के विकार से श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और घ्राण–ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं वाक, हस्त, पाद, गुद और जननेन्द्रियाँ–ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न हुई..... जिस समय ये पंचभूत, इंद्रिय, मन और सत्त्व आदि तीनों गुण परस्पर संगठित नहीं थे, तब अपने रहने के लिये शरीर की रचना नहीं कर सके। जब भगवान ने इन्हें अपनी शक्ति से प्रेरित किया तब वे तत्त्व परस्पर एक–दूसरे के साथ मिल गए और उन्होंने आपस में, पिंड और ब्रह्मांड दोनों की रचना की।[24] लगभग प्रत्येक धर्म में ब्रह्मांड का सृजन करने वाली शक्ति को ईश्वर, याहवे, अल्लाह व गॉड जैसे नामों से वर्णित किया गया है (जैन और बौद्ध धर्म अपवाद)। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ही पहले संसार को बनाया फिर अन्य चीज जैसे चांद, सूरज, पेड़–पौधे, पहाड़, नदियां, समुद्र, मानव इत्यादि। मनुष्य के सृजन को लेकर भी अलग–अलग कहानी धर्मों ने बताई हैं । इस्लाम के अनुसार अल्लाह ने अपनी छवि से आदमी को बनाया और फिर आदमी की पसली (पेट की हड्डी) से औरत का निर्माण किया।[25] अफ्रीका की एक जनजाति मानव का सृजन चांद की मदद से परमेश्वर द्वारा बताती है, उनका मानना है कि ईश्वर ने मिट्टी से गूंथकर मानव को बनाया फिर उसमें लहू डाल दिया।[26] ऋग्वेद में विराट पुरुष से चार वर्णों की उत्पत्ति का विशद वर्णन दिया गया है । सृजनवादी, ईश्वर को सूजनकर्ता, पालनकर्ता, विश्व संहारकर्ता के रूप में पूजते हैं। इसलिए यह जान लेना अति आवश्यक है की धर्मों ने अपने–अपने ईश्वर में कौन–कौन से गुण वर्णित किए हैं।

ईश्वर की संकल्पना

मानव मन की यह प्रारंभ से इच्छा रही है कि उसके पास कुछ अप्राकृतिक शक्तियां हों। मानव हमेशा से मृत्यु से डरता रहा है इसलिए लगभग हर मानव के मस्तिष्क में अमर होने की इच्छा बलवती रही है। मानव की एक अन्य इच्छा प्रकृति को नियंत्रित करने की भी रही है लेकिन यह सब ऐसी कल्पनाएं हैं जो आज तक भी कल्पनाएं बनी हुई हैं। प्रारंभिक मानव ने अपने मिथकों और विश्वासों के आधार पर एक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

ऐसे पात्र की कल्पना की जिसे ईश्वर कहा जाता है। ईश्वर के स्वरूप को लेकर मुख्य तौर पर दो प्रकार के विचार प्रचलित हैं। उनमें एक है निराकार ईश्वरय मनुष्यों का एक समूह ईश्वर को निराकार मानता है अर्थात जिसका कोई आकर ना हो। ऐसा मानने वालों में इस्लाम, यहूदी और ईसाई धर्म को मानने वाले लोग सम्मिलित हैं। हालांकि ईसाई धर्म में ईश्वर के पुत्र यीशु को मानव स्वरूप में ही प्रदर्शित किया गया है। जो लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं अगर उनके ईश्वर का गहनता से विश्लेषण किया जाए तो हम पाएंगे की उस कल्पित पात्र में भी मानवीय गुण उपस्थित हैं और वो भी, एक पुरुष के गुण। उदाहरण के तौर पर एक तरफ तो इस्लाम ईश्वर को निराकार मानता है वहीं दूसरी और ईश्वर के लिए पुरुषवाचक संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया का उपयोग करता है, अगर ईश्वर निराकार है तो ईश्वर का लिंग निर्धारण कैसे संभव हो सकता है ? केवल इस्लाम ही नहीं दुनिया के लगभग वे सभी धर्म और व्यक्ति जो ईश्वर को निराकार कहते हैं उनके ईश्वर में मानवीय गुण पाए जाते हैं। अब्राहमिक धर्मों में दुनिया की उत्पत्ति की कहानी है जिसका हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं, इस कहानी में याहवे, गॉड या अल्लाह ने 6 दिन तक दुनिया को बनाया व सातवें दिन आराम किया। कार्य करने के उपरांत आराम करना मानवीय ही नहीं बल्कि जीव मात्र का गुण है। इस तर्क से इस तथ्य को बल मिलता है कि निराकार ईश्वर में भी मानवीय गुण उपस्थित होते हैं और इसमें चकित होने जैसी कोई बात ही नहीं है क्योंकि मानव ने ईश्वर की कल्पना की है तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था। यहां पर ग्रीक दार्शनिक जेनोफनीज का कथन बहुत हद तक तार्किक नजर आता है, उन्होंने कहा था कि 'मनुष्यों ने देवताओं को अपने जैसा बनाया, इसी बात का समर्थन करते हुए जस्टिन गार्डनर सोफी का संसार में लिखते हैं कि अगर घोड़े और गधे कल्पना कर पाते तो वह ईश्वर को अपने जैसा बना लेते'। ईश्वर में मौजूद गुणों का आगे सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाएगा । अब आते हैं ईश्वर के स्वरूप को लेकर प्रचलित दूसरे विश्वास पर, दरअसल ईश्वर को निराकार मानने वालों के विपरीत मनुष्यों का एक बड़ा धड़ा ईश्वर को साकार रूप में मानता व पूजता रहा है। साकार ईश्वर यानी एक ऐसा ईश्वर जिसका एक निश्चित आकार होता है। इसमें सम्मिलित है सनातन धर्म, पारसी धर्म और विभिन्न जनजातीय धर्मों को मानने वाले लोग। अगर ध्यान से देखा जाए तो ईश्वर में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो मनुष्य ने अपने लिए चाहे थे जैसे कि अमरता, सर्वशक्तिमान, प्रकृति को नियंत्रण करने वाला, सर्वज्ञ इत्यादि। अर्थात मानव को जब यह है अनुभूति हुई कि वह यें सब गुण स्वयं अर्जित नहीं कर सकता तब उसने एक ऐसे किरदार की कल्पना की जिसमें यह सभी गुण उपस्थित थे। जैसे–जैसे मानव समाज विकसित होता गया वैसे–वैसे उसके ईश्वर में अन्य गुण भी सम्मिलित होते गए। उदाहरण के तौर पर, जब मानव परिवार बना कर रहने लगा जिसमें माता–पिता व उनके बच्चे शामिल होते थे तब उस परिवार के पुरुष ने अपने आप को उस परिवार के मुखिया के रूप में स्थापित कर लिया (पितृसत्तात्मक समाज के संदर्भ मेंय मातृसत्तात्मक समाज में यह स्थिति एकदम विपरीत होगी)। वह पुरुष एक पिता और पति भी था । क्योंकि पिता मुखिया है परिवार का सर्वेसर्वा है तो पिता की आज्ञा का पालन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

बच्चों के लिए और पति की आज्ञा का पालन उसकी पत्नी के लिए आवश्यक हो गया। इस स्थिति को मजबूत करने के लिए ईश्वर को 'परमपिता' वह पति को 'पति परमेश्वर' के पर्यायवाची से विभूषित किया जाने लगा। ईश्वर के विरुद्ध बोलना या कोई कार्य करना अनुचित माना जाता है ठीक वैसे जैसे कि पिता व पति की आज्ञा के उल्लंघन को लेकर मान्यता प्रचलित है। तदुपरांत विकास के इस क्रम में समाज में राजनीतिक संगठन स्थापित हुआ और शासक और उसके मंत्रीगण व्यवहार में आए। ईश्वर और देवता या अल्लाह और फरिश्ते कुछ कुछ ऐसी ही व्यवस्था नजर आती है जैसी शासक और उसके मंत्रीगण। ईश्वरीय शासन और कार्यपालिका में भी अलग–अलग देवता को अलग–अलग विभाग आवंटित कर दिए गए हैं जैसे बारिश वाले विभाग की जिम्मेदारी इंद्र को सौंप दी गई है, सौर ऊर्जा विभाग सूर्य के पास है और वित्त विभाग लक्ष्मी और कुबेर के अंतर्गत आता है (सनातन धर्म में प्रचलित विश्वास के आधार पर)। मनुष्य ने ऐसी ही व्यवस्था की कल्पना ईश्वर की शासन पद्धति और कार्यपालिका के लिए की जैसी व्यवस्था उसने स्वयं के लिए बना रखी थी। मनुष्य ने डर को दूर करने के लिए ईश्वर और धर्म का निर्माण किया लेकिन आज ईश्वर और धर्म स्वयं मनुष्य के लिए डर का सबसे बड़ा कारण बने हुए हैं। जीवन की सुरक्षा के लिए ईश्वर की कल्पना की गई थी परंतु ईश्वर के नाम पर कितने इंसान मारे जा चुके हैं और कितने मारे जा रहे हैं इसका अनुमान लगाना बहुत मुश्किल है।

मिथक और ईश्वर का धर्म में अंतर्संबंध

समाज में प्रचलित अनेक धारणाओं को बिना किसी प्रमाण के सत्य मान लिया जाता है जिससे समाज में अंधविश्वास को बढ़ावा मिलता है। ऐसी ही कुछ धारणाओं का पीछे जिक्र किया गया जो मिथक और ईश्वर के रूप में समाज में स्थापित हैं । अधिकांश मिथक अनुष्ठान के माध्यम से ईश्वर से जुड़े होते हैं तथा दैवीय विश्वासों का समर्थन कर उन्हें मजबूती प्रदान करते हैं। दरअसल मिथक और ईश्वर धर्म के दो पैर हैं जिनके द्वारा धर्म उन्नति और विकास के मार्ग पर गतिमान रहता है। धार्मिक विकास को गतिमान बनाए रखने के लिए अनुष्ठान ईंधन का कार्य करता है जिसकी बदौलत धर्म निरंतर विकास करता रहता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है की मिथक और ईश्वर एक दूसरे के पूरक तथा धार्मिक संरचना के आधारभूत तत्व हैं।

निष्कर्ष

जिज्ञासा, उत्सुकता और डर से उत्पन्न मनोवेग जिन्होंने विश्वासों पर आधारित मिथकों को जन्म दिया और जो हजारों सालों में मानवीय समाज और मानव मस्तिष्क के विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए धर्म के रूप में संगठित होकर एक ऐसी संस्था के तौर पर विश्वपटल पर सामने आई जिसने अतीत से लेकर वर्तमान तक लगभग प्रत्येक मानवीय क्रियाकलापों को समय–समय पर नियंत्रित किया। जमीन के अंदर (कब्रों में) परलोक के लिए जीवन यापन के लिए सामान रख कर अनुष्ठान करने से लेकर आसमान में उडते वायुयानों में उपस्थित दैवीय उपक्रम तक का सफर मानव तय कर चुका है। मानव ने पेड़ों से उतर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

कर दो पैरों पर चलना सीखा तथा प्रारम्भ में पत्थरों को उपयोग में लिया। कालांतर में स्वतंत्र हुए बाकी दो हाथों से मानव ने उन्हीं पेड़–पौधों और पत्थरों को पूजना शुरू कर दिया। संभवतः जब मनुष्य अपनी इहलोक की समस्याओं के समाधान ढूंढने में असफल हुआ होगा तो उसने ऐसे परलोक (स्वर्ग अथवा जन्नत) की कल्पना की जहां पर तमाम तरीके की सुख सुविधाएं उपलब्ध हों। आरम्भिक समाज में उन कार्यों को रोकने के लिए भी जो तत्कालीन समाज के लिए अहितकर थे उसने ऐसी ही एक पारलौकिक कल्पना (नर्क अथवा जहन्नुम) का सहारा लिया जहां पर कुकृत्यों के लिए दंड का प्रावधान था। अलग–अलग समुदायों ने अपने–अपने धर्म विकसित कर लिए। व्यवहारिक तौर पर देखा जाए तो धर्म जहां एक तरफ, समान धर्म को मानने वालों के प्रति सामाजिक सहयोग और परस्पर बंधुत्व की बात करता है वहीं दूसरी ओर अन्य धर्मों व उन धर्मों के मानने वालों को लेकर संकीर्ण व ईर्ष्या से परिपूर्ण दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है। मृत्यु के डर से बचने के लिए मनुष्य ने ईश्वर तथा धर्म जैसी संस्थाओं को विकसित किया और यह दोनों ही न जाने कितने मनुष्यों की मृत्यु का कारण बन चुके हैं और न जाने कितनों की मृत्यु का कारण बनेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

• इंजीनियर, असगर अली.(2024). *इस्लाम का जन्म और विकास.* नरेश नदीम (अनु०). राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली.

• काणे, पांडुरंग वामन.(1992). *धर्मशास्त्र का इतिहास भाग–1.* अर्जन चौबे काश्यप (अनु०). उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ.

• रजा, गौहर.(2024). *मिथकों से विज्ञान तक.* पेंगुइन रैंडम हाउस, गुरुग्राम.

• हरारी, युवाल नोआ.(2024). *सेपियंस : मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास.* मदन सोनी (अनु०). मंजिल पब्लिशिंग हाउस, नोएडा.

• हसन, डॉ वजीर.(2007). *पवित्र कुरान : परिचय एवं सिद्धांत.* पिलग्रिम्स बुक हाउस, वाराणसी.

• सहाय, डॉ शिवस्वरूप.(2020). *प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन.* मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली.

• Jain,V.K.(2025*). Prehistory and Protohistory of India*. D K Printworld, New Delhi.

•Masih,Yaqub.(2017). *A comparative study of Religions*. Moti Lal Banarsidas,New Delhi.

• Scheid,John.(2003). *An introduction to Roman religion*. Indiana University Press, Bloomington.

• Segal,Robert A.(2015). *Myth : A very short introduction*. Oxford University Press, Oxford.

• Shastri,Trilochan.(2024). *The essential of world religion : an underlying harmony*. Penguin Random House, New Delhi.

• Tweed,Thomas A.(2020). *Religion : A very short introduction*. Oxford University Press, Oxford.

• Vyse,Stuart.(2019). *Superstition : A very short introduction*. Oxford University Press, Oxford.

i

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

1. Scheid John, *An introduction to Roman religion*,(Bloomington: Indiana University Press,2003), pp.22-23.
2. Tweed Thomas A*, Religion: A very short introduction*,(Oxford: Oxford University Press, 2020), pp.3-4.
3. Tweed Thomas A*, Ibid*, p.6.
4. Tweed Thomas A,*Ibid*, p.7.
5. Tweed Thomas A, *Ibid*, p.7.
6. Tweed Thomas A*, Ibid*, p.6.
7. काणे पांडुरंग वामन, धर्मशास्त्र का इतिहास भाग–1, अर्जन चौबे काश्यप (अनु०),(लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, 1992), पृष्ठ 3.
8. हरारी युवाल नोआ, सेपियंस:मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास मदन सोनी (अनु०),(नोएडा: मंजिल पब्लिशिंग हाउस, 2024), पृष्ठ 18.
9. हरारी युवाल नोआ, वही, पृष्ठ 30.
10. हरारी युवाल नोआ, वही, पृष्ठ 32.
11. हरारी युवाल नोआ, वही, पृष्ठ 68–69.
12. हरारी युवाल नोआ, वही, पृष्ठ 69.
13. Tweed Thomas A],*Ibid*, p.69.
14. Tweed Thomas A, *Ibid*, p.69.
15. Jain V K, *Prehistory and Protohistory of India*, (New Delhi: D-K- Printworld, 2025), p.66.
16. Jain V K, *Ibid*, p.74.
17. Jain V K, *Ibid*, p.86.
18. Segal Robert A, *Myth: A very short introduction*,(Oxford: Oxford University Press, 2015), p.3.
19. Segal Robert A, *Ibid*, p.9.
20. Segal Robert A*, Ibid*, p.49.
21. रजा गौहर, मिथकों से विज्ञान तक,(गुरुग्राम: पेंगुइन रैंडम हाउस), पृष्ठ XX.
22. Vyse Stuart, *superstition: A very short introduction*,(Oxford: Oxford University Press, 2019) p.113.
23. रजा गौहर, वही, पृष्ठ 54.
24. रजा गौहर, वही, पृष्ठ 61–62.
25. रजा गौहर, वही, पृष्ठ 54.
26. रजा गौहर, वही, पृष्ठ 43.